Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीवृद्धिरत्न-माला ॥

कर्त्ता—

श्रीबृहत् खरतर भट्टारक श्रीजिनचन्द्र
सूरि आज्ञानुगामी पण्डितप्रधान
श्रीवृद्धिरत्नमुनि अधिष्ठाता
जेशलमेर निवासी ।

जिसे—

रतलाम (मालवा) निवासी
श्रीमान् दानवीर रायसाहब श्रेष्ठिवर्य्य
श्रीकेशरीसिंहजी साहब की आज्ञा से

श्री जंगमयुगप्रधान श्रीजिनदत्त सूरि आनंद चंद्र
पाठशाला के सेक्रेटरी हंसराजजी सोढा (लालन)
ने श्री जैन प्रभाकर प्रेस, रतलाम
में छपा के प्रसिद्ध की ।
वीर संवत् २४४०

प्रथमवार १००० | विक्रम संवत् १९७१ | अमूल्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीजिनायनमः ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

अथ निनाणुं यात्रा को चोढालियो लिख्यते

॥ दोहा ॥

वामा नंदनवंदिये अश्वसेन कुलचंद ॥ सप्तफणे धरी सोहता सेवेसुरनरवृंद ॥१॥ जिनवर अंगे जाषिया तपजपविविधप्रकार ॥ यात्रा निनाणुंसारिखो अवरन कोई उदार. ॥२॥ जव्वियण सेवन करे जात्रा निनाणुं जेह ॥ विधिसहित वंदन करे शिवसुखपामेतेह ॥३॥ प्रथम पवित्रतन कीजिये धरिये निरमल ध्यान॥ नवप्रदिक्षणा दीजिये चैत्य वंदन नवजाण ॥ ४ ॥ प्रतिक्रमण राई देवसी देव वंदन त्रणवार ॥ पाकोपाणी पीजिये लक्ष जपोनवकार ॥ ५ ॥ षष्टम अष्टम तप करो चढते चित्तउदार ॥ बृह्मचर्यव्रतपालवो जूशय्या सुविचार ॥ ६ ॥ पूजा अष्ट प्रकार की करिये विधि बिस्तार॥ वरघोडो जलयात्रा शक्तिके अनुसार ॥ ७ ॥ गुरु मुख ज्ञान सुणी करी श्राविका सुज्ञान ॥ सणगार साध्वी संघलिया धरयो प्रजुको ध्यान ॥ ८ ॥ संघवी सेठ बहुफणा सौजाग्य जार्या सुजा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णं ॥ रूपकुवर रंगेंकरि यात्रा निनाणुं जाए ॥ ए ॥

॥ ढाल पहिली ॥

बोलेरे पपईया हांजीरे पियुलोरे गाढा मारू कोयलडी तो वागांरी रूखवाल ॥ एदेशी ॥

थलवट देशमें हांजीरे दीपतोरे मोहन मोरा जेसाणे में श्रीजिनराज ॥ गढ मढ मंदिर हांजीरे मालियारे मोहन मोरा देख्यां तोरेनयण लो-भाय ॥ १ ॥ प्रथम जेटो हांजी महावीरजीरे मोहन मोरा शासण रातो प्रभु सिणगार ॥ पंद-रेसेने हांजी इक्यासीयेरे मोहन मोरा चरढीयां तो करायो प्राशाद ॥ २ ॥ समरे सासुत हांजी मूलराजजीरे मोहन मोरा जणेतो भराया जिन-बिंब ॥ दोय सो पचानु हांजीरे जाणियेरे मोहन मोरा गौतमनेरे गणधर संग ॥३ ॥ कोटीक गच्छमें हांजी गुरु सोवतारे मोहन मोरा दीपेश्रीजिन कुश-लसुरिंद ॥ भविरण भेटो हांजी शुभ भावसुरे मोहन मोरा ज्युं सुखपावे थांरो शरीर ॥ ४॥ भव २ दीजे हांजीरे मोजणीरे मोहन मोरा चरण कमलरी सेव॥ वृद्धिचंद प्रभु हांजी जल जेटियारे मोहन मोरा भसलादे सुत जिनराज ॥ ५ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल दूसरी ॥

गोरीनेहार लोंगारो सुहावे जेरी परमलमहलामें आवे

॥ हालरीयेरी देशी ॥

अब आदिजिनेश्वर पूजो इण समोनही देव दूजो ॥ पंदरेसे न रेंतीसे गणधरचोपमा सुजगीसे ॥ १ ॥ सच्चोधर चैत्य करायो एतो पुण्ये अचल रहायो॥ दीजे प्रदक्षणा सारो देवाधिदेव जुहारो ॥ २ ॥ जिनबिंब छ सो सातो हस्ती पर मरुदेवो मातो ॥ सिद्धाचल मंडण स्वामी जगजीवन अंतर-जामी ॥३॥ हूंतोरे चरणे आयो मनडामें हर्ष सवायो ॥ तुम गुण को पारनआवे जो सहस्रजीव्हकरि गावे ॥४॥ श्रीचंद्रा प्रभु चित वसिया मेरा हृदय कमल उलसिया ॥ जिनतिन भुवन जुहारिया भेटंता कारज सारिया॥५॥पंदरेसे नेवली पंदरे गणशालीलाज लीयो धनरे ॥ सोले से ने पेंतालो जिनबिंब चक्षुसे जालो ॥ ६ ॥ अष्टापदतिर्थ राजे तिहां कुंथु जिनेश्वरछाजे॥ पंदरे से ने बत्रीसे एतो चोपमा गोत्रभेंदी से ॥ ७॥ चारूं खुटे गौतम स्वामी में जेट्या अंतर जामी ॥ सतचारके उपर जाणो चालीस ने चार वखाणो ॥८॥ अचिरा सुत उपर सोहे मूल नायक तन मन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोहे ॥ प्रभु शांति जिणंद सुखदाई निरखंतां पाति क जाई ॥ ए ॥ संखवालगोत्रमेंरा जे खेतो वीदो संघवीछाजे ॥ थाप्याजिनबिंब रसाल आठ सोने चार विशाल ॥ १० ॥ गणि सत्य विनय गुरुराया मुनि-अगरचंद मन भाया ॥ एतो वृद्धिचंद गुण गावे कर जोमी शीशनुमावे ॥ ११ ॥

॥ ढाल तीसरी ॥

॥ देशी गणगोरकी ॥

संभव जिनवरसेवीये जिनबिंब छसो चारहेलो ॥ चवदेसे सतियासीये एतो करी प्रतिष्टा सारहेलो (संभ०) ॥१॥ श्रीजिन भद्रसूरिश्वरू जिनथाप्यो-ज्ञान भंडारहेलो ॥ पांचेसाने परचोदीयो जिणक्षी धोलदमीनो लावो हेलो (संभ०) ॥२॥ शीतल जिन बंदोसदा मूल नायक शांति विराजे हेलो ॥ संकट हरण संकटहरेनवखंमापार्श्वछाजेहेलो॥शीतल०॥३॥ पंदरेने आठे समे बिंबथाप्या चारसोतीसहेलो॥मागा गोत्रमें दीपता सा लुंण मुंणने धन्न हेलो॥शीतल०॥४॥ वीसविहरमानवंदिये तीनपाट नंदी श्वरराजे हेलो ॥ सिद्धगिरि पाटसुहामणो तेने बंदू वे कर जोमी हेलो ॥ विम०॥५॥ पार्श्व प्रभु प्रणमुंसदा एतो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बावन जिनालो चैत्य हेलो ॥ बारे सो बारो तरे प्रभू थाप्या जयोउद्योत हेलो ॥ पार्श्व०॥६॥ संघवीसेठीये घोलेसा जस लीनो जगत में जोय हेलो ॥ वारे सो बावन जला बिंब तोरणसुधा जोय हेलो ॥ पार्श्व०॥७॥ गुरु गौतम ने नितनमुं मारे सद गुरु सदा सहाय हेलो ॥ शासणरीसानिधी करे सदा भैरव चक्रेश्वरी माय हेलो ॥ पार्श्व० ॥ ८॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ आज गई थी समोवसरण में ॥ एदेशी ॥

यात्रानिनाणुं किनी जुगतसुं उलट भाव मन आंणीरे ॥ छहजार उपर इक्यासी जिनबिंब सगला जोईरे ॥ जात्रा० ॥१॥ रंग मंडपरलियामणो रचियो उणमें नाटक वणियोरे॥ काचकाम सोनेहरी सांचो जाणे मिनोजडियोरे॥ जात्रा०॥२॥ अठाई महोत्सव किनो उमंगसु धवल मंगल वरतायारे ॥ सत्तरभेद पूजा भणीसुंदर शाली भाण नृप आयारे॥ जात्रा०॥३॥ फागुण वदि दशमी सिद्धियोगे श्वस्तिक मंडल की नोरे॥ अष्ट द्रव्य से पुजन करके नरभवलावोलिनोरे॥ जात्रा० ॥ ४ ॥ सातश्राविका रूपकुंवरसंग यात्रा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करिहरखाईरे । चांदमल उदार चित्तसुं नक्तिकर दिखलाईरे ॥ जात्रा०॥५॥ आणंद हर्ष वधाई अनोपम फूल फले अब जोईरे ॥ ज्ञान गुरु की नक्ति करतां मन इच्छा फल होईरे ॥ जात्रा०॥६॥ खतरगच्छ नट्टारक सुखकर श्रीजिन मुक्तिसूरिंदारे ॥ तत्पट्टे जिनचंद्र सूरिश्वर राजित जाणे दीणंदारे ॥ जात्रा० ॥७॥ नद्रसूरिशाखा अति उत्तम सत्य विनयसुखकारीरे ॥ अगरचंद गुरु के चरणांकी नक्ति हृदय में धारीरे जात्रा० ॥८॥ वृद्धिचंद प्रनू गुण गाया यात्रा करी हरखायारे ॥ परमपुरुष परमेश्वर पुजो श्रीजिनराजवतायारे ॥ जात्रा० ॥ए॥ सयउगणीसे वासठ वरसे चैत्र कृष्ण पक्ष मांहिरे॥ दशमी दिन जिनराजकृपासु अनुपम दोलत पाईरे ॥ जात्रा निनाणुं करी जुगतसुं उलट नाव मन आणीरे ॥ इति चौढालियो संपूर्णम् ॥

॥ श्री लोद्रवपुर श्रीचिंतामणी पार्श्व जिन स्तवन लिख्यते ॥

॥ देशी काछबेरेगीतरी ॥

चालोसहियां लुद्रवपुररी जात पार्श्व पुज

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांजीरे ॥ चालो सहियां लूद्रवपुररीजात श्रीरे चिंता मणि पार्श्वपुजसां पुजसां रेमहाराराज ॥१॥ पुजो देवा प्रथम जिणंद पार्श्व पुजसांजीरे। पुजो०। अजित संभव जिनभेटिया भावपुरे महाराराज ॥ २ ॥ परचाधारी अधिष्टायक अहि देव। पार्श्व०॥ थानतणी तीहां थापना थिरथाप्ना रे महाराराज ॥३ ॥ त्रिगडे सोहे अष्टापद महाराज। पार्श्व०। चत्तारी अठदश दोय वंद्या चोवीसजीरे महाराराज ॥ ४ ॥ कल्प वृक्ष फुले फले सहित ॥ पार्श्व० जाली हे छत्र शिर सोहतो मन मोह तोरे महाराराज ॥ ५ ॥ सहस्त्रफणा श्री चिंत्ता मणि महाराज ॥ पार्श्व०॥ श्यामवरणे प्रभुजी सोहामणा रलियामणारे। महाराराज ॥ ६ ॥ तोरण तणीदेखो तजबीज ॥ पार्श्व०॥ उपर प्रभूजी विराजिया दोनुबाजुरे महाराराज ॥ ७ ॥ पगथ्यां चढतां पातिकजाय। पार्श्व० ॥ चिंतामणि चिंताहरे वांछित फलेरे महाराराज ॥ ८ ॥ भंरू साली भलथाइरू कुलभाण। पार्श्व०॥ जिणओ चैत्यकराविया सुखपावियारे महाराराज ॥ ९ ॥ शिखरबंधरथ अतिसोभाय। पार्श्व०॥ शेत्रुंजे संघमेंकराविया पधराविया रे महा ॥१०॥ भैरववीर हाजरखडा हजूर ॥ पार्श्व० ॥ समरे ज्यांरी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सानिधीकरे संकट टलेरे ॥ महाराराज ॥ ११ ॥ दादासाहब श्रीजिनदत्तसूरिंद ॥पार्श्व०॥ कुशलकरण कुशलेसरु । गूरु मुरतीरे ॥ महाराराज ॥ १२ ॥ प्रभू जीरी महिमा वरणीनजाय॥ पार्श्व० ॥ ऊलहलते जे ऊलहले जिनराजजीरे। महाराराज ॥ १३ ॥ नृप जेसाणे रावल श्री गजसिंह ॥ पार्श्व०॥ हीरोहरुकी चमकावियो फल पावियोरे महाराराज ॥ १४ ॥ वामसुत श्री चिंतामणि महाराराज॥ पार्श्व०॥ वृद्धिचंद करी विनती सुणलो जियेरे ॥ महाराराज ॥ १५ ॥ उगणीसे पंचावन शुभमास ॥ पार्श्व० ॥ भादवसुदि दशमी दिने देवीकोटमेरे ॥ महाराराज ॥ १६ ॥ इति पदं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीवरमसर पार्श्वनाथजीरी लावणी लिख्यते ॥

पार्श्व प्रभू पुजो सुखदाई ॥ अशुभ कर्म हटजाय पलकमें प्रभूजी वरदाई ॥ पार्श्व० ॥१ ॥ बाणारसी नगरी में जनम लियो ॥ तव देवंगना आई। जनम महोत्सव कुबरी करके अति आणंद पाई ॥ पार्श्व०॥ ॥ २ ॥ इंद्रादिक सहु देव मिलीने मेरू गिरजाई॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षीर समुद्र से कलशा भरके स्नात्र वणवाई ॥ पार्श्व० ॥ ३॥ अठाई महोत्सव प्रभुको करके निज थानक जाई ॥ अश्वसेन वामाके द्वारे बटरही बधाई ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ परमजोति मुख चंद्र विलोकित देखत दुख जाई ॥ केवल ग्यान उपाय जिनेश्वर मुक्ति रमणी पाई ॥ पार्श्व० ॥५॥ पुण्यवंत पुनमके सूरज पुजन बणवाई ॥ श्रावक और श्राविका मिलके भक्ति दिखलाई ॥ पार्श्व० ॥ ६॥ भद्र सूरि शाखा खरतरगच्छ भट्टारक आई ॥ वृद्धि चंद्र पारस प्रभु भेट्या ब्रह्मसरमाई॥ पार्श्व० ॥७॥ इति पदं सम्पूर्णम् ॥

॥ उधोमोहनजीकेणा एदेशी ॥

चिंतामणि पार्श्व मेरामें दासहूं प्रभुतेरा। दरशणकुं जीया मेरातरसे जेरा भाग्य उदयजोफरसे॥ चिंता० ॥१॥ प्रभु मारुदेश में राजे जिन लुद्रव पुरमें विराजे ॥ अश्वसेनजीके चंदा वामा देवीके नंदा॥ चिंता० ॥ २ ॥ श्याम वरण प्रभु तन सोहे। अजी निरखत सब जन मोहे ॥ श्री संघ यात्री आवे अष्ट द्रव्य से पूज रचावे ॥ चिंता० ॥ ३ ॥ चिंतामणि पार्श्व

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यावो सुख संपत्ति आणंद पावो ॥ वृद्धिचंद प्रभु गुणगाया में रतन चिंतामणि पाया ॥ चिंता० ॥४॥ इति पदं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ लावणी लिख्यते ॥

श्रीआदि नाथ महाराज जवो जव हमकुं दर शण दीजे ॥ श्री आदि० ॥ प्रभुमोरा देवी माता जाया तोरे पिता नाभिजो राया ॥ तुम जन्म अयोध्या पाया जिहां इंद्र इंद्राणी आया ॥ तिहां जन्म महोत्सव करके । परम आणंद सुख तिहां पाया ॥ श्रीआदि० ॥ १ ॥ देव जल जर कंचन लाया । प्रभुजीको नवण कराया । फेर केशर चंदन घसाया नव अंगे अंगीय रचाया । तिहां धूप दीप नैवेद्य आरतो नाटक खूब बणाया ॥ श्री आदि० ॥ २ ॥ इण विध महोत्सव करके । देव गये आपणे घरपे । सब जीवन को मन हरखे प्रभु लीनो संयम धरके ॥ कर्मोकुं काट दुख जाल मोक्ष मारगकुं हीया में धरके ॥ श्री आदि० ॥ ३ ॥ इण विधीसे जेनर ध्यावे सुख संपत्ति आनंद पावे दूबध्या सहु दुरे जावे जेरा जन्म मरण मिटजावे । देवी कोट चौमासी पूनम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिवसे वृद्धिचंद गुण गावे ॥ श्री आदि० ॥ ४ ॥
इति लावणी सम्पूर्णम् ॥

॥ राग सोरठ मल्हार ॥

क्या हठ कीनोरी सहीयां नेमी कीनो गुमान ॥ क्या ह० ॥ १ ॥ विन अवगुण क्युं तजी रे सांवरा जैसे पाको पान । अष्ट भवन की प्रिती हमारी नव भेरोसन आण ॥ क्या ह० ॥ २ ॥ पशु छोडाय चले रथ फेरी दीनो संवत्सरी दान ॥ सहसा बन में संयम लिनो धर्यो तुम निश्चल ध्यान ॥ क्या ह० ॥ ३ ॥ मेरे मन प्रभु ध्यान तुम्हारो अब कछु देवो दान । बृद्धिचंद कहे धन २ राजुल प्रभुजी दीनो सन्मान ॥ क्या हठ कीनोरी सहीयां नेमी कीनो गुमान ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी वधावेरी ॥

आज दीवस रलीयांमणो धन्यघडी धन्यभाग सजनी मेरीए ॥ आज० ॥ १ ॥ प्रथम जिनेश्वर पुजसां आदि नाथ अरिहंत ॥ सज० ॥ नाभिराय घर चांदलो मोरादेवी मात सुजाण ॥ सज० ॥ आज ॥ २ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोलम जिनवर सेवीये शांति नाथ सुखकार ॥सज०॥ सेवंता संकट टले जपतां जय २ कार ॥ सज० ॥ आज० ॥३॥ यादव कुलमें जाणीये समुद्र विजयजी कानंद ॥ सज० ॥ नेम जिणंद दया करी पशुवांको काट्यो फंद ॥ सज० ॥ आज० ॥ ४ ॥ कमठविडा रथोपाशजी उपगारी अरिहंत ॥ सज० ॥ नयरी वणारसी सोहता अश्व सेनराजाण ॥ सज० ॥ आज० ॥ ५ ॥ चोवीसम महावीरजी शासणरासिणगार ॥ सज० ॥ गौतमगणधर प्रणमतां लब्धितणा भंडार ॥ सज० ॥ आज० ॥ ६ ॥ गावोवधावो नावसुं मोतीये चोक पूराय ॥ सज० ॥ वृद्धि चंद्रकहे नित-नमो घर २ मंगलमाल ॥ सज० ॥ आज० ॥ ७ ॥ इतिपदं संपूर्णम् ॥

अथ श्रीचिंतामणी पार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ देशी वालेसररे गीतरी ॥

पश्चिम दिशतीर्थ शुद्धवपुर चावोहोहो मंदर पांचा में आप विराजो श्रीजिनेश्वर मुखरा दरश दिखावो महाराराज ॥ १ ॥ नाजिराय मरुदेवीका

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नंदन नेटोहोहो ॥ सोवन कायारा जगतारक श्री जिनेश्वर मुखरा० ॥ २ ॥ अजितनाथ युग्मतिर्थंकर ध्यावोहोहो ॥ विजीया नंदन अघकाटन ॥ श्री जिनेश्वर मुख० ॥ ३ ॥ पुजो प्राणी सेना सुत गुण गावोहोहो ॥ संजव स्वामी अंतरजामी ॥ श्री जिनेश्वर मुखरा० ॥४॥ सहस्त्रफणा जिन वामा सुत सुखकारीहोहो ॥ अहि छत्रधारी छबी प्यारी ॥ श्री जिन० मुख० ॥ ५ ॥ अष्टापदतीर्थ चौमुख चोवीसेहोहो ॥ त्रिगडे सुरतरु मनमोहे ॥ श्री जिने० मुख० ॥ ६ ॥ चिंतामणी मूलनायक चिंता चुरोहोहो ॥ अश्वसेन जीरा छावाहो ॥ श्री जिने० मुख० ॥ ७ ॥ मस्तक पर प्रजु केनीका मुकट सुहावेहोहो ॥ कुंमल कानां में झलकावे ॥ श्री जिने० मुख० ॥ ८ ॥ प्रजुजी तो दिन में तीन स्वरुप वणावेहोहो साचे चित ध्यावे फल पावे ॥ श्री जिने०मुख० ॥९॥ दादाजी जिनदत्तकुशल गुरुदेवाहोहो ॥ मूरत्तिसमरथांफलदाता ॥ श्री जिने० मुख० ॥ १० ॥ अष्टायक भैरवकाला और गोरा होहो ॥ परतिक मणिधारी सांवला ॥ श्री जिने०मुख० ॥ ११ ॥ सन्मुख तोरण के फरस्यां पातिक जावे होहो ॥ तिलकेपर पद्म आसण ॥ श्री जिने० मुख०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥१२॥ जात्री बहु आवे नविजन नित ध्यावे होहो ॥ पुजरचावे तन मनसुं ॥ श्रीजिने० मुखरा० ॥ १३ ॥ प्रतिदिन उत्सव की महिमावरणी न जावे होहो ॥ मुक्तिद्वारे का मालक ॥ श्री जिने० मुख० ॥ १४ ॥ वृद्धिचंद जिनवरकुं निश दिन ध्यावे होहो ॥ तेजकविजिनराजस गावे ॥ श्रीजिने० मुख० ॥१५॥ उगणीसे सरुसठ पौषसुदशशी दूजो होहो ॥ एपद गाया सुंभव जलतारे ॥ श्रीजिनेश्वर मुखरा दरश दिखावो महारा‌राज ॥ १६ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ राग आशावरी ॥

॥ अब मोहेरुरहेरे उसदिनका । तजदे नरम सबमनका ॥ काची माटी काचा नांडा । संचित लागे उणका ॥ अब०॥१॥ यतीयोगी तपसी सन्यासी सब पाणीके पनका । काल आहेमी फिरत सर साधे दावपरे मृगननका ॥ अब०॥२॥ मेरी:२ करत सबफुंठी जेसे स्वपन रयणीका । आखर लेखा पूरा होयगा ज्युंमालाके मणिका ॥ अब० ॥ ३ ॥ तप जपदान शीयल संमय. वृत. पालो सफल होय जीयका ॥ वृद्धिचंद नजो नगवतकुं । सुखपावो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिवपुर का ॥ अब मोहेकर हेरे उसदिनका तजदे भरम सब मनका ॥ ४ ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ देशी गोपीचंदरे ख्यालरी ॥

॥ आजतो सहरमें सहीयांहर्ष वधावो ॥ नेम कुंवर अब आसीहेलो ॥ आज तो० ॥ समुद्र विजय शिवा देवीको नंदन यादव कुल अजु वालो हेलो ॥ आजतो० ॥१॥ नेमकुंवर अब तोरण आया पशुवांकी सुणीहे पुकार हेलो ॥ आजतो० ॥ २ ॥ जीवनकी जब दया जोआंणी । ओसंसार असारहे लो ॥ आजतो०॥३॥ तुर्ततज्या सब तनका आभुषण चलगया गढगिर नारीहेलो ॥ आजतो० ॥४॥ राजुल कहे जननीयोग धरीने प्रितम पासे मेंजासुंहेलो ॥ आजतो०॥५॥ मात पिता जब आग्याआपी चलगई गढ गिर नारीहेलो ॥ आजतो० ॥६॥ नेम राजुल दोनोमुक्ति सिधाये पहलीराजुल नारीहेलो ॥ आज तो०॥७॥ नर नारी प्रभु नित प्रतिध्यावे वृद्धिचंद गुण गावेहेलो ॥ आजतो० ॥ ८॥ उगणी से पेतालीस वरसे । ज्ञानपंचमी गुरु वारहेलो ॥ आज तो सहर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में सहीयां हरख वधावो नेमकुंवर अवआसीहेलो ॥ इति पदं सम्पूर्णम् ॥

॥ देशी गोपीचंद रे ख्यालरी ॥

अजितजिणंदा मोरी अरजसुणि जो पुरोमनमारी आसहेलो ॥ अजि० ॥१॥ आपवसो प्रभुमोक्ष नगरमें । में इणभरत मझारहेलो ॥ अजि० ॥२॥ काल अनंत रोएकंडी तरु साधारण पामीहेलो ॥ अजित० ॥ ३ ॥ सुरनर तिरिवली नरकतणीगत । पामीहुंपण हारयोहेलो ॥ अजित० ॥४॥ तुंसमरथेप्रभुसुरतरुसरिखो । जिणसुतुझनेजाच्योहेलो ॥ अजित० ॥ ५ ॥ वृद्धिचंद करेप्रभुविनती दीजो सुखनोवासहेलो ॥ अजित जिणंदामोरी अरजसुणीजो । पुरोमनमारी आसहेलो ॥६॥ इति पंदम संपूर्णम् ॥

॥ देशी फुलझरी रे गीतरी ॥

श्रीजिनभेटिये जीहोके भविजनभेटो चित लगायके ज्युं सरसी सघला काज ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० मारुदेशके मध्यमें एतो जेशलमेरु सुथान ॥ श्रीजिन०॥ ॥१॥ भवि० संघवीसेठ बहुफणा शुभ पटवादेशे प्रसिद्ध ॥ श्रीजिन०॥ भवि० रतनपुरी रलीयामणीएतो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मालवदेशे जाण ॥ श्रीजिन० ॥२॥ भवि० पूनमचंद दीपचंदजी सौभागमल ने चांद ॥ श्रीजिन०॥ भवि० चांदमल राय केशरी सुतपुरणकलाप्रवीण ॥ श्रीजिन० ॥३॥भवि० चांदमलभार्य्याभणुं आणदकुंवरने फूल॥ श्री जिन० ॥ भवि० आणंद भावउलटियो अब भेटूं श्री गिरि राय ॥ श्रीजिन०॥ ४ ॥ भवि० केशरीमल मांगीतने तब मेल्यो अहमदाबाद ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० कृपामुनिमहाराजने विनती करवाने काज ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ भवि० आणंद लिनी आखमी मेरे दूध घीरतका त्याग श्रीजिन० ॥ भवि० गुरु उपयोगी गुणेभरया जब देख्यो लाभ अपार ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ भवि० सिद्ध क्षेत्र भेटण भणी तब विहार कियो ततकाल ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० ग्राम नगरपुर विचरतां साथे समुदाय सवयोग ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥ भवि० संवेगी मुनिवर भला गुरु करे धर्म व्योपार ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० जीव-दया पाले सदा फिरसंयम सत्तर प्रकार॥ श्रीजिन० ॥८॥ भवि० बारे भेदे तप तपे देखो एसे अणगार॥ श्रीजिन०॥ भवि० पालीताणे पधारिया जब भेट्या श्री गिरिराय ॥ श्रीजिन०॥ ९ ॥ भवि०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आणंद अति हर्षे करी आव्या दरशणके काज ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० सुदि आशाढेत्रयोदशी शुभलग्न लियो तिहां साज ॥ श्रीजिन० ॥१०॥ भवि० गुरु मुख ज्ञान सुणी करी चौमासो दीनो गाय ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० भगवती सूत्र शुरु करयो गुरु शेत्रुंजे महात्तम साथ ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० सतके सतके पूजा करी रुपैया गिन्नी मोहर ॥ श्रीजिन० ॥११॥ भवि० आणंद तपस्या इणीपरे इग्यारे ने वली आठ ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० छठ अठ द्वादश सहु करया शुभदीनो सुपात्रे दान ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥ भवि० आश्विन सुदि दशमी दिने शुरु कीनो तप उपधान ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० नव श्रावकने श्राविका मिल गुणतीमें गुणसट्ठ ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥ भवि० पूजाने प्रभावना नित्य भोजन भक्ति विशेष ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० वरघोडा रथ यात्रा अट्ठाई महोत्सव कीध ॥ श्रीजिन० ॥१४॥ भवि० नवकारसी नेतो फिरयो सवि जीम्या अतिहरषेह ॥ श्रीजिन०॥ भवि० माला पहरी मोदसुं प्रभावना गिन्नी अर्ध ॥ श्रीजिन० ॥ १५ ॥ भवि० पोथी पूजी ज्ञानरी शुद्ध शास्त्र तणे परमाण ॥ श्री जिन० ॥ भवि० गुरु सेवा साचेमने करे दिन २

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चंऊते जाव ॥ श्रीजिन० ॥१६ ॥ नवि० षटअरुवारा कोसकी प्रदक्षणा दीनी दोय ॥ श्रीजिन० ॥ भवि० यात्रा कीनी सहुजुगतिसुं मनऊारी पुरी आस ॥श्री जिन० ॥ १७ ॥ नवि० विनय वंत देखो विंदणीजी उमराव कुंवर है नाम ॥ श्रीजिन० ॥ नवि० सयउ-गणी से सतरे पोष कृष्ण पंचमी गुरुवार ॥ श्री जिन० ॥ १८ ॥ नवि० वृद्धिचंद यात्रा करी मन आणंद हर्ष अपार ॥ श्रीजिन नेटीयेजीहो के नविजन नेटो चित लगाय ॥ १९ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ सहियांए नेमिश्वर वनडे नेगिर नारीजातां राखलीजो इणाचालमे ॥

सहियांए अमिय ऊराजिनराज चंदाप्रनु चित वस्याहेलो रतनपुरीमे नेटियाहेलो सहियांए अमिय ऊराजिनराज चंदाप्रनु चित्त वस्याहेलो ॥ १ ॥ दक्षिणवामे पाशजीहेलो सहि० मनमोहन महाराज देख्यां हरखेहियोहेलो देख्यां० सहि० ॥२॥ चोवीसें जिनराजनीहेलो सहि० सेवासारे हमेश पूजो पद मावती हेलो पूजो० सहि० अमी० ॥ ३ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गौतम गणधर नित नमोहेलो सहि० लब्धितणा भंडार पूरेमन कामनाहेलो पूरे० सहि० अमी० ॥ ४ ॥ आबू ने गिरनारजीहेलो सहि० सिद्धगिरि महाराज भावनित्य भेटियेहेलो भाव० सहि० अमी० ॥ ५ ॥ अष्टापद आदेनमुंहेलो सहि० समेत शिखर सुखकार वीसेजिनवंदियेहेलो वीस० सहि० अमी० ॥ ६ ॥ समोवसरणर चनारची हेलो सहि० त्रिगरु श्रीजिनराज देवे प्रभुदेशना हेलो देवे० सहि० अमी० ॥ ७ ॥ विजय यक्षभृ कुटिदेवी हेलो सहि० गौमुख यक्षसुहाय गजेन्द्र चढ्यातिहां हेलो गजे० सहि० अमी० ॥ ८ ॥ साशणदेव सदानमुं हेलो सहि० शेत्रुंजे गिरिसिणगार चक्रेश्वरी मातजीहेलो चक्रे० सहि० अमी ॥ ९ ॥ क्षेत्रपाल कालागोराहेलो सहि० भैरव वीरभूपाल संकट सवचूरवे हेलो संक० सहि० अमी० ॥ १० ॥ श्रीसदगुरुने सदानमुं हेलो सहि० दत्तसूरि श्वर देव मूरती महाराज की हेलो मुर० सहि० अमी० ॥ ११ ॥ कुशलकरण कुशलेश्वरु हेलो सहि० निरधारचां आधार वंछित फलपूरवे हेलो सहि० अमी० ॥ १२ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंदिरअतिमजबूत छे हेलो सहि० देख्यां हर्षअपार बगीचे के मध्यमे हेलो बगी० सहि० अमी० ॥ १३ ॥ वृद्धिचंद की वीनती हेलो सहि० माघमास सुदी दूज पाटमहोत्सव दिने हेलो सहि० अमी० ॥ १४ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ लावनी राजुलकी ॥

क्यों गये छांरू गिरनार मेरे भरतारवहीं हमजावें। होगया मुल्कमें सोर नेमराजुलको व्याने आवे ॥ क्या सजी रंगीलीजान देख सुरइन्दर खुशहोजावे। सज २ सोला शिणगार सबी नरनारदेखने पहुंचे। तोरणके पास पशु दुःखपावे सोरमचावे ॥ ऊुल ॥ पशुवांकीदयाविचारी तबछांरूीराजुलनारी। वे जाय चढेगिरनारी कहेजननीं। तुझको पति सुरमा सती अवरपरणावे ॥ क्यों०॥१॥ आग्यादे मुझको मात मेरीलौ नेमनाथसे लागी। जननीपरणुं नही ओर मेरापति नेमनाथहे सागी। जोगन बनजावुं आजमिले महाराज नेमवैरागी। आग्या दीनी मुझमात सखी सदसातदई बरूभागी॥ ऊुल ॥ अब किस्मत खुली हमारी भगवतने विपतविडारी। मे हुइजगतसे न्यारी अबमिलेपति भगवान। सरे सबकाम येही हम-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चावै। क्यों०॥२॥ जोगनका रूपलिया धार शिरकी स-
बीलटी लोचकर काली। कपड़े पहनेसंदली वहांसे-
चलीसती मतवाली। मुखपत्ती झोलीहाथ बगलमे
ओघा उमरवाली। रस्तेमे वारीस हुई जींजती गि-
रनारीको चाली॥ झुल॥ सबसखि विछुरगईवांहीमे
गिरनारीपर आई। फिरगई गुफाके मांही तनसे उता-
रकर चीर। निंचोड़े नीर, खड़ी सुकलावे॥ क्यों०॥३॥
वो उसीगुफाके वीच खड़ातोरहनेमी ध्यान लगाये।
राजुलपेनहीथा चीरदेखकर रहनेमी ललचाये॥ उन-
दीया काउसग्ग छोड़काम रिपु उनको आनसताये।
वोपहुतापास फेरराजुलयह वचनसुनाये॥ झुल॥ ह-
स्ति कीतजअसवारीक्यो खरकीआपविचारी। तुं छो-
डमुक्तिसीनारी खलके खावे अग्यान पाय पकवान
नही सरमावे॥ क्यों०॥४॥ फिर रहनेमी युं कहे सुनो-
सतवंती वचनहमरा। ये भिगता शीलपहाड़ ग्यान
खंबेका दीया सहारा। मैं भवसागर के वीचडूबता
राजुल मुझेनिकला। तेरीमहिमा कहियनजाय स-
ती तें जादवकुलको तारा॥झुल॥फिरयेही मता उपा-
या दोनोवहांसे उठध्याया। फिरनेमनाथ पा आया
हाँसिल मुरादहोगई दिक्षादोउलई प्रभुगुण गावे॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्यों० ॥५॥ सबसे पहले महाराज गये रहनेमी शिव-केमांही । चौपन दिन पहली नेमनाथके राजुलमु-क्ति पाई । पीछे पहुंचे भगवान जोतमे सबकी जो-तीसमाई । करमाकी बेड़ी काटहुवे थिर अचलनग्रके मांहि, ॥ फुल ॥ करमाकी धूलउडाई वेगया मुक्तिके-मांहि, यों जिनआगममे गाईवेगये कालसे जीत करमगये वीत परमसुखपावे ॥ क्यों०॥६॥ उन्नीसे इक-तालीस कायेसाल खुबदरसाया । भादुवादिवृस्पत्ति-वार अष्टमी पाली मायवणाया । जी नारनोलहे वत्न हमारा जन्मस्थान वताया । जी जातीअगरवाल म-हाजन उत्तमछंद कथगाया ॥ फुल ॥ योंशिवचन्द्र यति वखाणे इस्कीरंगत पहचाणे कोईचात्रकबुद्धिवाने पशुवाकी रक्षाकरीमुक्तिजो वरीउसीकोध्यावे ॥क्यों० ॥ ७ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ राग भैरवी ॥

क्यों समजावे महतारी में नेमनाथकी प्यारी रे ॥ क्यों०॥ दूजो वर हमको नही चहीये में सतवंती नारी ॥ क्यों० ॥१॥ अधव्याहीकर छांड गये हे कुछ नहीं वात विचारी ॥ क्यों०॥२॥ दिननहीचेन रेननहीनिद्रा लागत वुरी अटारी ॥ क्यों०॥३॥ जेसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जलबिन मरत माछली सो गत होई हमारी ॥ क्यों० ॥ ४ ॥ जर जेवर पोशाक त्याग दिये मन वैराग्य धारी ॥ क्यों० ॥ ५ ॥ पहिन चंदली चीर चली हे बन जोगन मतवारी ॥ क्यों० ॥ ६ ॥ शिवचंद कहे उन एक न मानी जाय चढी गिरनारी ॥ क्यों० ॥ ७ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ रागमारू ताल दादरा ॥

नाथमेरी तुम से ल लगी वामासुत महाराज आज मेरी तुमसे ले लगी ॥ पहिलेतो अज्ञान रह्यो मेरी कमता बुद्धि ठगी । फिर सतगुरु ने ज्ञान बतायो किसमत आन जगी ॥ नाथ० ॥१॥ पन्ना वरण सहस्त्रफण शिरपर देखत विपदाजगी । शिवचंदकहे मारूदो पद । जूमतामोरीतगी ॥ नाथ० ॥ २ ॥ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ राग-कल्याण ताल ३ ॥

दुःख हरण सुखदेन ए सुरतरु आदिजिणंदको जिया जजरे ॥ दुःख० ॥ तिव्र करमसे निपट कपट तेरे अबतुं अंतर कपट तजरे ॥ दुःख० ॥ १ ॥ पुन्य जोगसें तुं प्रभुपायो दरश तरस तुं कर अजरे ॥ दुःख० ॥ २ ॥ तुं देवा में करुं तोरी सेवा तुम हाथे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अब मोरी लजरे ॥ दुःख० ॥ ३ ॥ रामने तारो अरजी धारो में प्रभुजी तुम पय रजरे ॥ दुःख० ॥ ४ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी-हरिने कुटीया ब० रामायण ताल केरवा ॥

विरथा जनम हंसा काएकोरे खोई ॥ वि० ॥ विरथा जनम हंसा काएकुं खोई ॥ संग चले ना कोई आखिर विरीयां चलेगोरे पाप पुण्य हंसा साथेरे दोई ॥ वि० ॥१॥ मात तात अरु भ्रात तुम्हारे सगे सम्बन्धी सोई ॥ उन विरियां कोई आमोन आवे जिनजीरो धर्मरे हंसा संगहोई ॥ वि० ॥ २ ॥ सगे सम्बंधी न्याती गोती अपने स्वारथ रोई ॥ तेरे स्वारथ कोईना रोवेरे स्वारथकी आप्रीतसगाई ॥ वि० ॥३॥ हंसा अज्ञानी तोउना चेते वार २ कह्यो जोई ॥ कारी कंबर उजरी न होवेरे वार २ पथरपे धोई ॥ वि० ॥४॥ कर्मवसे चिहुंगतीमें भटके शुद्ध श्रद्धा न होई ॥ यतिराम-अब सर्णो हेरी देवनिरंजन मेनेरे जोई ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ कव्वाली तालधमाल ॥

अगरहम वेतमा होतेतो चेतनको खबर करते। कदम सुच तीर काबिलकेऊपटगहे वीचदिलधरते २॥ तिला खुर बान करडारुं कदमके नुरपरसुखसे॥ नखाकी रोशनी अयसीतुलीखुरसेदहेरूखसे २ ॥ अजबहेपास जाखुदके करत जो बन्दगी हररोज। तिनोकेजानपरवारुं सकल जरजान अपनाखोय २ ॥ अरजमेरी कबुलएदिल परम विश्वासजगमिलजे। उरूकहो नवोदधिविचसे, रहेजोदाशउरमध्वकी, २ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ मालकोष दोहा, ताल त्रिताल ॥

मयाकर मेरेपर अयवर्द्धमान तेरानामलेतीहे सारी जहान॥ म० ॥ १॥ जसतेरादुनियामे मशहुरहे अठारा दोषनसे तुहीदुरहे ॥ म० ॥ २ ॥ अवलमेहे आदम आखिरमे तुहीं निरंजननिराकारसबतुंहीतुंही, ॥ म० ॥ ३ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ जंगलो ताल केरवो ॥

बाबाप्रभुपार्श्वनके तनपर सोहे आठीअङ्गीया। अंगियाहीराकी करवाई मुखमल कपड़ापे जड़-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाई। बुंटीजांत जांतनिकसाई रुपियासवालरूलग-वाई। रतनजरू वाई अंगीया ॥ वा० ॥ १ ॥ मस्तकबि-चमुगटमनमोहे । कुंरूलकानांमे हदसोवे। हीरूकी-हीरबाजुबंधवांहे । प्रनुगुणपारनपावेकोये । रतनजरू-वाईअंगिया ॥ वा० ॥ २ ॥ मुखरु अधिकुं पुनम चंद आवे । जात्रु तणा बहुवृन्दपुजतपावे। मन आ-णंद काटो सेवकनाकर्म फंद । रतनजरूबाई अंगि-या ॥ वा० ॥ ३ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी पीयापर घरमति०
ताल केरवा ॥

चंद्रप्रनु तारोतो सहीरी ॥ चं० ॥ तुमशरणागत्त आयो चंद्रप्रनु ॥ ता० ॥ रतलामनग्रमेंसोहतारी । लक्ष्मणानंद जिनराज। निरखीमनहरखित नयोरी। चन्द्रवदनसुखकाज ॥ चं० ॥ १ ॥ तख्तनशीनाजिन चंद्रप्रनुरी शोनावरणीनजाय । घससुकरूप्रनुअंग-कोरी चरचुं चित्तलगाय ॥ चं० ॥२॥ दधिसुता अरु क-मलरिपुरी तासुनामप्रनुदाश । युगकरजोरूी विनवे तुम टारोनवडुःखफास ॥ चं० ॥ ३ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दादा साहेब के स्तवन ॥

॥ सदगुरुरायमोरी अरज सुणीजे. मोपर महिरकरीजे हेलो ॥ टेर ॥ रतनपुरीमें मंदिरतिहारो फुलरही गुल क्यारीहेलो ॥ सद० ॥ १ ॥ श्रीजिनदत्तसूरिश्वरसोहे मुरती मोहन गारीहेलो ॥ सद० २ ॥ आसपास गुरु चरण विराजे दत्तकुशल गुरुदेवा हेलो ॥ सद० ॥ ३ ॥ अद्भुत वेदी जालीकी छबि उपर कलश सोनेरी हेलो ॥ सद० ॥ ४ ॥ ज्ञानजंगारगुरुदेव कोथाप्पो रुपकुंवरने फूल हेलो ॥ सद० ॥ ५ ॥ रायेकशरीसिंहसुतसोहे तसुनार्य्याउमराव हेलो ॥ सद० ॥ ६ ॥ जेनरनारी इकचितध्यावे मनवंछितफलपावे हेलो ॥ सद० ॥ ७ ॥ वृद्धिरतनको चरणचितवसियो जिममुक्ताफलहंस हेलो ॥ सद० ॥ ॥ ८ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ कल्याण त्रिताल ॥

गुरु देवदयाला गुरु प्रतिपाला गुरु देवन कुंवन्दनारे ॥ दे० ॥ अग्यान रजनीं गुरु ने मिटाई उदयोग्यान मयि चंदनारे ॥ दे० ॥ १ ॥ मिथ्या बंधन बांधेकुगुरुने सतगुरु तौभ सब फंदनारे ॥ दे० ॥ २ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समकित सुरमो मारे नयन में, सारयो देवाजिनंद-
नारे ॥ दे० ॥ ३ ॥ एसे सदगुरु सहायकरो मेरे, बाहरू-
देविके नंदनारे ॥ दे० ॥४॥ श्री सदगुरुके चरण कमल
में, रामकी होजो नित्यवंदनारे ॥ दे० ॥५॥ इति पदं
संपूर्णम् ॥

॥ राग जंगला ताल केरवा ॥

गुरु चरणपे चाढो माला फूलकीजी । गुरुके
गुंहली करोनी तंदूलकीजी । आवे नर नारी के
साथ । पुजे जोडी दोनु हाथ ॥ गुरुदेवाछो जगपति
नाथ । गुरुपादुकावनीछे अमोलकीजी ॥ गुरु० ॥ १ ॥
गरु राजेशर जेसाणे । थांने सारी दुनिया जाणे ॥ शुभ्न
राजत है अमराणे । एतो इंद्रकी शोभा मेरु चूलसी
जी ॥ गुरु० ॥२॥ गुरु में देख्यो दर्श तिहारो ॥ तब से
प्रगट्यो पुन्य हजारो ॥ अब तो खुलियो भाग्य हमारो।
में बलीहारी जावुं गुरुपम धूलकीजी ॥ गुरु० ॥ ३ ॥
मेरी वंदना आप स्वीकारो । मोंको जेसे वणे तेसे
तारो । विरुद है तारण तर्ण तिहारो । राममांगे छे
माफी भूलकीजी ॥ गुरु० ॥४॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ राग मारू ताल दादरा ॥

दादा जिनदत्तएसूरि महिमापूरि महियल-मेगुरुराज ॥ कर दुर्मति दूरि मिथ्यस्वचूरि सूरिश्वरां शिरताज ॥ दादा० ॥ बाहरुडेमाता वांछितताता कुलमें प्रगटे गुरुज्ञान ॥ वल्लभसूरिके वल्लभ तुमगुरु जिनमतकेहो जान। प्रगटे पुन्य अंकूरी। म० म० ॥१॥ शोभाफेलानी जय २ वानी बोले सकल जहान ॥ गुणछत्रीसे सोहे अतिशय जगो २ थुम्भथान ॥ समरथांहाजर हजूरी॥ म० म० ॥२॥ बावीश जोधा सबकारोध्या चार चोर वसकीद्ध ॥ दशविध धर्मकुं धारण करके आचारज पदलीद्ध॥ वाजेजसकीतूरी॥ म० म० ॥३॥ मेरे सहायक गच्छके नायक जीरुके जंजणहार ॥ रामकहतहेसेवाचहतेहे चरणनपर जाउंवार। सारमोरी लहोरी ॥ म० म० ॥४॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ कव्वाली ताल धमाल ॥

गुरु सम को नहीजग में यही हम दिलमें गायाहे। गुरुमहाराज-एकहीरा हमींने खोज पायाहै। गुरुकी कर्ते है बंदगी उसीसे हमको नफाहै उठाते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शिरपे सब हुक्मा गुरुने जो फरमाया है। इसीसें हमको हे इज्जत भला सब जगमें बोलेंगे। सेन खबरांऐ खुशीकी दुसमणां सब सरमायाहै। गुरुकी हे महरवानी जिनंदवानीको सच जानी। तजेंगे गुरु अग्यानी वे इलमांकु नरमाया है। गुरुके चरणां में पमकर सवी हम पाप खोवेंगे। रामजपता कुशल गुरुको उसीकी छत्र छाया है॥ इति पदं संपूर्णम्॥

॥ राग झिंझोटी ताल केरवा ॥

गुरु देवहै ज्ञानकी ज्योति३ मोतिसमहेउजास ॥गुरु०॥ वांछिग नंदा-ए-वदा-सुरंदा तुमको २ राम रांणा तुमदाश॥गु०॥१॥ गुरु ग्यानीकी वानी सुहानी हमको सुएयो हुवे हर्ष उल्लास॥ गु०॥२॥ दाश उवारोनिहारे कर धारे तुम्ने पूंरी सहुनी आश.॥ गु०॥३॥ गुरु वईयां की धुईयां २ हमरईयां निश दिन २ दुर हुवे दुःख त्रास॥गु०॥४॥ सोहे सुरतमुरत पुरत २ मनके चित्ते रामकी पूरो आश॥गु०॥५॥ इति पदं संपूर्णम्।

॥ राग धनाश्री तीनताल ॥

गुरु चरणें ललचाना मेरातो मन । स्याद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाद मतके गुरु ग्यानी। वानी अमृत समाना, ॥ मे० ॥ १ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म्मकेघरमे। अनंताई कालबसाना ॥ मे० ॥ २ ॥ दोषअठारा रहितजो देवा। परतिद्दहमकोबताना ॥ मे० ॥३॥ जिनेंद्रवानी जब श्रवने नीसुनी। साचकूंठ हमजाना ॥ मे ॥ ५ ॥ अबमे चेत गयो कुगुरुसे। सतगुरु बेन लगेवाना ॥ मे० ॥ ५ ॥ एसे गुरुकीमें वारी २ जाउं-रामदाशयशगाना ॥ मे० ॥६॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ राग धनाश्री त्रिताल ॥

सत्त गुरु मेरे मन भाया। देखोरीमाई स०। चरण पादुका अद्भुत सोवे। सेवतसुरनरराया॥ दे० ॥१॥ चंद्र सूरि पट धरसेवत। सूर भविजन के मन भाया ॥ दे० ॥ २ ॥ परचा पूरणएसे सदगुरु। पुन्यउदयसे पाया ॥ दे० ॥ ३॥ दासरामकरे विनतीनित। यश सदगुरुकामेगाया। दे० ॥ ४ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥लावणी लंबी रंगतकी ताल केरवा॥

दादा साहेब जिनचंद्रसूरिंदका दरशण नित्य करणा चहिये ॥ खूब ध्यान लगाके. अर्ज निज कारजकी करणा चहिये ॥ १॥ मृग मद केशर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कपूर मिलाके अम्बर फिर घसणा चहिये ॥ निज शुद्ध भावसे गुरुका चरण कमल पूजना चहिये ॥ १ ॥ जाई तुरी मचकुंदमालती चंपकली मोतीया चहिये ॥ वो दमनाकेतकी चंबेली इस्क पेच जोगीया चहिये ॥ ३ ॥ मोल गुलाब सेवती जुई कदंबअंबमाजर चहिये ॥ फूल हंस हजारा मनोहर चरणोपर धरणा चहिये ॥ ४ ॥ शाहन्शाह सुलतान दिल्लीपका प्रति बोधक येहि कहिये ॥ जिनसिद्धसूरिके परम गुरु मणिधारीरटणा चाहिये ॥ ५ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी पियापर घरमतजा ॥

॥ ताल केरवा ॥

निपट मन धरसतगुरु को ध्यान ॥ नि० ॥ वृथा जनममतहार ॥ नि० ॥ हां सतगुरुके चरणशरण थी पावे पूरण ग्यान ॥ उत्तम जन अरु साधु संगतथी वधे चोगुणोमान ॥ नि० ॥ १ ॥ सुरपती खग पति और एनरपति धरेगुरु शिरआंण ॥ मुढ अजान जो याको भूले थावे बहु हेराण ॥ नि० ॥ २ ॥ दीन दयाल दया निधी स्वामी आपे वंछितदान ॥ कुशल कुशलए समरण हरदम हृदयकमल विच आण ॥ नि० ॥ ३ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरु श सब जगत पूकारे राखेकुछ नही जान ॥ उत्तमगुरु जिनसिरूसूरिंदके कुशल कुशल पहे चान ॥ जि० ॥ ४ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ राग कव्वाली ताल केरवा ॥

करुं गुरु अर्ज तुमसेती जरासुणले तो क्या होगा । तुम्हारुं वीर्द सुंणीने आयोतुमतीर गुरु राजन। मुझे ना तुम विन आधार ओरे भटकुंतो क्या होगा। मेरे अवगुण निहारोना जो हो अवगुण क्षमा कीजे। हवे इक सर्ण तुमहेरा चर्ण रखलें तो क्या होगा । कहे करजोड करो परशन यहि गुरु अर्ज तुमसेती । रहु तुम ध्यान निशदीहमां अजर लक्ष लेंतो क्या होगा ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ चाल अशवारीकी ताल दीपचंदी ॥

कुशलगुरु निरखणदो अशवारी । तेरीअद्भुत कांति अपारी ॥ कु० ॥ तोरी चरणकमलबलिहारी ॥ कुशलगुरु निरखणदोछिब भारी ॥ कु० ॥ चोवा श चंदन ओर अरगजा । मृगमदमहेक अपारी ॥ औ-रगुलाबकेतकी । चंपक फूलरहीगुलक्यारो ॥ कु०॥१॥ देव भुवनको इन्द्रभुवनहे । झिलमिलज्योति अपारी॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वंछित फलदायक वर लायक। सुरनामकसुखकारी ॥ कु० ॥ २ ॥ भला २ भूपति थ हमचतहे । हय गय भीडहजारी। राणारावसेठसेनापति । आवतहे अश- वारी। कु० ॥३॥ भेरी संखमधुरधुनिवाजे। सुरनाईसुर- सारी। गावतहेकेई मधुर २ धुनि। सानु गगनमझारी॥ कु० ॥४॥ गच्छनायक जिनचंद्रपटोधर। खरतरगच्छ- अवतारी। पद्मसूरिआ अरजो करतहे । कुशल २ सुखकारी ॥ कुशल० ॥ ५ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी ढाल कोयलडी ॥

भटनरे हो चालो सिद्धाचल गिरिनार, जाव त जिनवर-द्वार, तेरा टुटत पाप अपार रे ॥ भटनरे० ॥ १ ॥ तन मन से जिनवरं पद परसे, नाम जपे नवकार। पूजन कर पर भव को लाहो, लीजिये वारं वारे ॥ भटनरे० ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष परचा श्री आ- दिजिनेश्वर, नेम प्रभु उरधार। पावत मोक्ष अमरपद प्राणी, आवागमन निवार ॥ भटनरे० ॥ ३ ॥ दिन दिन अधिको कर उत्सव, उत्तम धर्म विचार। सांज समे नित भावना भावो, कर प्रभु चरनो सुं प्यार ॥ भटनरे० ॥ ४ ॥ सेवक तेजकवि की सुणजो, श्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारस गोडी पुकार। अठाइमहोत्सव ज्ञानकी जक्ति, हो रही जय जयकाररे ॥ जटनरे० ॥ ५ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी डंकेमें ॥

हां सदा नवपद उर ध्यावो, मिलकर प्रेम जावना जावो । अष्टमहोत्सव जक्ति ज्ञानकी, कर फल पावोरे ॥ सदा० ॥ १ ॥ अतर सुगंध अमोल लगाई, अंग पक्षाल अबल अधिकाई । केशर मृगमद चरच वरख से अंगी रचावोरे ॥ सदा० ॥ २ ॥ धूप धोर सुं मगन करीजे, धर्म काम में चित्त नित दीजे । लीजे तनमन लगा, प्रजु दरशन को लावोरे ॥ सदा० ॥ ३ ॥ समोसरण में प्रजु विराजे, शिरपर छत्र छटां हद छाजे। जविजन सकल समाज जुक्ति कर, धरम वधावोरे ॥ सदा० ॥ ४ ॥ आज दुतिय पूजन दिन नीको,श्री गोमी पारस प्रजुजीको। तेज कवि कहे हृदय अटल आंनद सजावोरे ॥ सदा० ॥ ५ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥देशी सिद्धाचल गिरि परम सुहायो॥

सिद्धाचल गिरि परम सुहायो, ॥सिद्धा०॥ सकल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम चित्त चायो ॥ आदि श्वर अरिहंत विराजे,कर द-
र्शन तन मन हरषायो ॥ सिद्धा० ॥१॥ चोवीसी जि-
नराज मंदिर मे, लागत ठाठ सवायो ॥ इंद्रादिक सुर
आते फरसवा,तीरथ मोटो महात्म्य वधायो॥सिद्धा०
॥२॥ नवाणुं प्रकारकी पूजा उत्सव, आज सुहायो ॥
जविजन जावत प्रेम जावना,मेघ मलार कर वरसन
आयो ॥ सिद्धा० ॥ ३ ॥ श्रीगोमी पारस प्रजुजीको
परतक्ष परचो पायो ॥ जयो अधिक आनंद मुलक
में सेवक तेजकवि यश गायो ॥ सिद्धा० ॥ ४ ॥ इति
पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी वणजाराकी ॥

मिलजविजन जाव वधावे, आबूगिरि अचल
सुहावे । गिरि आबूकी छबी जारी, माने ओरन
लागत प्यारीजी। फरस्यासुं पातिक जावे ॥आबू०॥१॥
आबूकी अजब कहानी, सब जानत केवलज्ञानी
जी । जिनकीजो नजर में आवे ॥ आबू० ॥ २ ॥
कोई गावत प्रत्यक्ष जाने, प्रजु गत घट घट की
जानेजी । महिमा नहि वरणी जावे ॥ आबू० ॥ ३ ॥
शुजपूजन उत्सव कीनो, कर जक्ति अमृत रसपी
नोजी । परजवफल निश्चय पावे ॥ आबु० ॥ ४ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीगोमी पारस सुर स्वामी, विश्व पालक जग घट जामीजी। नित तेजकवि यशगावे ॥ आबू० ॥ ५ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी लूरमें ॥

सहस्त्रकूटजी का दरशन करवा, सिद्धाचल गिरि जावा एलो। भाव धरीने प्रभुपद फरसां, मनचिंत्या फल पावांएलो ॥सहस्त्र० ॥ १॥ पांचभरत ओर पांच ऐरवत, दशक्षेत्र विरदावां एलो ॥ अतित अनागत वर्त्तमानसों, तीसो गुणगुणावाएलो ॥ सहस्त्र०॥२॥ महाविदेयकेअठोतरविजयमे, एकसोसाठ पुरावाएलो। चोवीसजिनवरका कल्याणक,वीसोतरवरतावाएलो ॥ सहस्त्र० ॥३॥ पांचमहाविदेहेमे वीसा, विहरमान वतावाएलो। चारशाश्वता सबकोय जाने, विधिसुं पूजन करावाएलो ॥ सहस्त्र० ॥४॥ एक सहस्त्र चोवीस बिंब छाजे, चरनफरस चितचावाएलो। कोवर ने श्रीमुखकी शोभा, इणसम गुणमें जतावांएलो ॥ सहस्त्र० ॥५॥ केशरने कस्तूरी चरचां, रतनाकी आंगियां रचावांहेलो। कनकथालआरती उतारी, परदक्षणाफलल्यावांएलो ॥ सहस्त्र० ॥६॥ आठपहर अरु घमी पलपलमें, हिरदे श्रीजिनवर ध्यावां-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एलो । शाम समे नित जाय मंदिरमें, जक्ति जा-वना जावांएलो ॥ सहस्त्र० ॥७॥ दीनवचन आधी न पणेसो, श्रीजिनराजमनावाएलो । अष्टमहोत्स-व आनंद अधिको, तालमृदंग वजावांएलो ॥ सहस्त्र० ॥ ८ ॥ श्रीगोडीपारस प्रजु थारे, चरना शीश नमा-वांएलो । सेवक तेज कवि करजोमे, वार वार यश गावांएलो ॥ सहस्त्र० ॥ ए ॥ इति पद संपूर्णम् ॥

।देशी गोटी पणीहारी अवलूरी रंगतमें।

प्रजुजी सोनारो सूरज उगीयो, सहियां समेत शिखर पर आज जिनेश्वर, परतक्ष वीसांइ भेटिया ॥ १ ॥ प्रजुजी अजितनाथ संजवस्वामी, सहियां अजिनंदन महाराज । जिनेश्वर परतक्ष वीसाइ० ॥ २ ॥ प्रजुजीसुमतिनाथ पद्म प्रजु, सहियां सुपार्श्वजिनराज ॥ जिनेश्वर परतक्ष० ॥ ३ ॥ प्रजुजी चंदा प्रजुजी श्री सुविधिजी, सहियां शीतल नाथ सारे काज ॥ जिनेश्वर परतक्ष वीसा० ॥ ४ ॥ प्रजु जी श्री श्रेयांसजी श्रीविमलजी, सहियां अनत नाथ धर्मनाथ ॥ जिनेश्वर० ॥ ५ ॥ प्रजुजी शांति नाथ कुंथुनाथजी, सहियां ध्याउं हुं जोमी हाथ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनेश्वर० ॥ ६ ॥ प्रभुजी अरस्वामी मल्लिनाथजी, सहियां मुनिसुव्रतजीमनाय ॥ जिनेश्वर० ॥ ७ ॥ प्रभुजी नमीनाथ श्री पार्श्वनाथजी, सहियां सबका दर्शन पाय ॥ जिनेश्वर० ॥ ८ ॥ प्रभुजी वीसाही जिन २ जिनवरा, सहियां मोक्ष सिधाये आप ॥ ॥ जिनेश्वर० ॥ ए॥ प्रभुजी समेतशिखर श्रेणि मोक्षकी, सहियां फरस्यां ही काटे पाप ॥ जिनेश्वर० ॥ १० ॥ प्रभुजी आज पूजन दिन पांमियो, सहियां अठाईमहोत्सव होत ॥ जिनेश्वर० ॥ ११ ॥ प्रभु गोमी पारस छाजे तख्तपे, सहियां अटलजागरही जोत ॥ जिनेश्वर० ॥ १२ ॥ प्रभुजी वार २ नित विनवे सहियां तेज कवि करजोड ॥ जिनेश्वर० ॥ १३ ॥ इति पद संपूर्णम् ॥

॥ देशी उपर पराण एचाल ॥

शतरभेद पूजा रचीजी मिलगावत भविजन साथ ॥ अब मुझ दरशन दीजो सांवराजी ॥ १ ॥ ए आंकणि । निरमल नीर पखालकेजी, अंगलोवत मधुरे हाथ ॥ अब० ॥ २ ॥ केशर चंदन चरचियाजी-फिर वरग कटोरी कोर ॥ अब० ॥ ३ ॥ अंगी रचाई प्रेमसुंजी, कर धूपनकी घमघोर ॥ अब० ॥ ४ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोती झिगमिग जागतीजी । अब आरतीयांरी छिब देख ॥ अब० ॥ ५ ॥ गगन नगारा घुर रयाजी ठुलरया पुष्प विशेष ॥ अब० ॥ ६ ॥ सुरसब चरु विमान में जी, अरु इन्द्रादिकमिल आय ॥ अब० ॥ ७ ॥ भक्ति सहित भगवानकाजी, निज श्रीमुख दर्शन पाय ॥ अब० ॥ ८ ॥ झाता अंगसु द्रोपदी जी, चित मनसुं पूज्या जिनराज ॥ अब० ॥ ए ॥ विधविधसो वरदान देकर, सारयामनरा काज ॥ अब० ॥ १० ॥ रावण और मंदोदरीजी, मिल अष्टापद पर नाच ॥ अब० ॥११॥ जांघ नारु की तार करीनेरेश्रीजिन भक्ति साच ॥ अब० ॥ १२ ॥ अष्ट-महोत्सव आदसुंजी, कांइ दिन प्रति अधिक होय। अब० ॥ १३ ॥ श्रीगोरीपारस प्रभुजी, थारां दर्शन करे सबकोय ॥ अब० ॥ १४ ॥ तेजकवि करजोरु केजी, तनमन से विनति तोय ॥ अब० ॥ १५ ॥ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी फूलजरीकी ॥

आज भले चित भावसुं, मिलपूजो श्रीगुरुदे-व। जिन आचार्य हो ॥१॥ जीयोके गुरुवरपरतक्षपरचा देरहे, कलि काल समय महाराज ॥ जिनआचा० ॥२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवर श्री जिनदत्त दयालके, गुणमहिमा समुद्र जहाज ॥ जिन० ॥३॥ जीयोके गुरुवर जिनचंद्रसूरि प्रताप सो लिटवट परमणीप्रकाश ॥ जिनआ० ॥ ३ ॥ जीयो० गुरुवर दिल्लीमाणकचोकमे, नितसबकीपूरत-आस ॥ जिनआचा० ॥४॥ जीयो गुरुवर स्थान करायो बादशाह, जहां पूजे छतीसो पान ॥ जिनआचा० ॥६॥ जीयो गुरुवर जितोइ चम्पापो चढरयो, सबलेरहेमुस-लमान ॥ जिनआचा० ॥७॥ जीयो गुरुवर श्री जिनकु-शल कृपालको समरो सब वारं वार ॥ जिन० ॥८॥ जीयो गुरुवरचोथा श्रीजिन चंद्रसूरि सम फिर न भये अवतार ॥ जिन० ॥९॥ जीयो गुरुवर प्रवल पूजावतपादका नक्तन- की सुणत पुकार ॥ जिनआचा० ॥१०॥ जीयो गुरुवर ज्ञान नंम्हारकरा-वियो वृद्धिचंदजी यती मुनिराज ॥ जिनआचा० ॥११॥ जियो गुरुवर अठाईमहोत्सव आद रयो शुन-ज्ञान भक्ति के काज ॥ जिनआचा० ॥१२॥ जियो गुरुवर गुरांसा उपदेश देकरप्रथम उचारी वात ॥ जिनआचा० ॥ १३ ॥ जियो गुरवरशुद्ध चित्त वोल्याचोधरी, जबकलम शिरेमलहाथ ॥ जिन० ॥ १४ ॥ जियो गुरुवर श्रीसंघ सामिल प्रेरणाकर टीपणीआंक नराय। जिनआचा० ॥१५॥ जियो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवरयुग अषाढवद अष्टमी रवीपूजा शुरुकराय ॥ जिनआचा० ॥१६॥ जियो गुरुवर धुर पूजा पंच ज्ञानकी जक्ती हितकररिख वेस । जिनआचा० ॥१७॥ जियो गुरुवर दुजी नवपद नाथकी, सिद्धाचल तृतीय विशेष ॥ जिनआचा० ॥१८॥ जियो गुरुवर चोथी आबू राजकी, फिर सहस्त्र कूट आनंद ॥ जिनआचा० ॥१९॥ गुरुवर छट्ठी शिखरजी उपरे वीसांगएमोक्षजिणंद ॥ जिनआचा० ॥ २० ॥ गुरुवर सतरभेदकी सातमें अरुपंच प्रमेष्टी आठ ॥ जिनआचा० ॥ २१ ॥ गुरुवर दादाजीको देखियो नवमे दिन दुगणोठाठ ॥ जिनआचा ०॥२२॥ गुरुवर दिनपूजानिशि जावना, जविक मन अधिक उमंग॥ जिनआचा० ॥ २३ ॥ गुरुवररवंतरगच्छउपासेर, गोमीपार्श्वरटतश्रीसंघ ॥ जिनआचा ० ॥२४॥ गुरुवरतेजकवि कथतान नितको गाय लगावतरंग ॥ जिनआचा० ॥ २५॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशीनारनोलके ख्यालकी ॥

लूडव पुरकल्पवृक्ष आछोचढ्यो, सबके मन जायोजी ॥ लूडव पुरकल्पवृक्षआछोचढ्यो ॥ टेक॥ इंदोर सेतीबणकरआयो ॥ लूडवपुरके मांय । मारा प्रभुजी लूद्रवपुर के मांय । पांच सहस्त्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुपैया लागा, शोभाकहियनजाय ॥ माराप्रभुजी शोभा० । शुभदिनदेखवृक्षओरदुजो, दीनोकलश-चढाय । माराप्रभुजीदीनो० । शुभदिनदेखकलशच-ढयो तो बहु । पूजाउत्सवकीन, करिप्रतिष्ठासरूपचं-दजी । पंडितचतुर प्रवीण । सखिसवमंगलगा-योजी ॥ लूडव० ॥ १ ॥ लूडवपुरमें कल्पवृक्षको । देख्यो अजबहेमोल ॥ मारा० देख्यो० ॥ पत्तोंकी हरियाली गेहरी ॥ फलऔरपुष्पअमोल ॥ मारा० ॥ फल० ॥ ओर वृक्षपर तोता कोयल । पंछीकरतकि-लोल ॥ मारा० पंछीकरतकिलोल वृक्षपर । दाख-नरंजी खाय । कियोजापतो खूबचतुर्दिशदीजाली खीचवाय, शीशपरछत्रचढायोजी । लूडव०।२। लूडव-पूरमें कल्पवृक्षकीदेखीअजबवहार ॥ माराप्रभुजी० देखी० ॥ प्रभुपारशकादर्शनकरकेपायो हर्ष अपार ॥ मारा० पायो० ॥ संवतउन्नीसे चुंबालीस । तिथि-द्वादशीरविवार ॥ मारा० तिथि० ॥ द्वितीयचैत्रके मध्यादिवसहुई । पूजासत्तरप्रकार । झाजताल मृदंग बजे । ओर गावे सबनरनार । इंदशिवचंडवणायोजी ॥ लूडव० ॥ ३ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ इति श्रीवृद्धि रत्नमाला संपूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ शिखरजीकी यात्राकोस्तवन

देशी विभेंकेगीतकी । चाल साजनगुरूीउमाव-तारेविंजा देतालंबीफार ॥ लंबीफार० ॥

श्री रेजिनेश्वर भेटताजी, मारेमनफेरीपूरे आश ॥ मनरू० ॥ प्रतक्षपरचापार्श्वकाजी, ध्यावोपूर्णज्योति-प्रकाश ॥ पूर्ण० ॥ १ ॥ अस्पतजेशलमेरकाजी, मोटापटवाहे सेठ प्रमाण ॥ पटवा० ॥ सुजसवढायो-चांदनेजी, दाता प्रगट्याकुल पुन्यवान ॥ प्रगट्या० ॥ २ ॥ लक्ष्मी रे प्रगटीपांचमेंजी, करीमुलकां मुलक-दूकान ॥ मुलका० ॥ मालवदिशरतलाममेजी, चा-वासेततणानिजस्थान ॥ सेठ० ॥ ३ ॥ धर्मधुरंधर नामणीजी, खुदआणंदकुंवरउत्साह ॥ आणंद० ॥ शुनदिनकरणीयात्राजी, नलउपज्यामनमेंनाव ॥ उपज्या० ॥ उगणीसे अफसठ आसोजांजी, सुदीएकादशसजसंग ॥ एका० ॥ कोटेहो क-लकत्तेगयाजी, चित्तउजमणातणोउमंग ॥ उजम-णा० ॥ ५ ॥ पावापुरीफिरसिद्धकरयाजी, किनीया त्रासुदनिर्वाण ॥ यात्रा० ॥ मंदिरविहारजुहारियाजी, क्षत्रीकुंमकीयात्रासुजाण ॥ कुंरू० ॥ ६ ॥ कुंरूलपुर-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीयात्राजी, फेरराजगिरिकीजात ॥ राज० ॥ फिरकाती पूनमदिनेजी, कर कलकत्ते जागणरात ॥ कलकत्ते० ॥ ७ ॥ सत्तरभेदीपूजारचीजी, करयो स्वामीवत्सल सुखकाज ॥ स्वामी० ॥ मकशुदावाद-पधारियाजी, वंद्याजसमुनिमहाराज ॥ जस० ॥ ८ ॥ अजीमगंजवालुचरमंदिरकाजी, दर्शनकरचितचाह॥ दर्शन० ॥ कटकोलाजसमुनि राजकीजी, सुणीदे-शनाआणंदआय ॥ देशना० ॥ ए ॥ पुजायों स-त्तरभेदकीजी, करयोस्वामीवत्सलसमेल ॥ स्वामी०॥ पेमाकीप्रभावनाजी, लाकुरुपैया कटोरीनारेल ॥ रुप-या० ॥ १० ॥ भागलपुरसुंचंपापुरीजी, भेट्यावासु-पुज्यजी जाय ॥ वासु० ॥ नाथनगर सुं चालियाजी, चित्तसमेतशिखर हरषाय ॥ समेत० ॥ ११ जिहां गजराज चढावियोजी, फिर धर्मशाला धर्मविशेक ॥ धर्म०॥ विसांहीजिनवर भेटियाजी, और अंगियां रचना अनेक ॥ अंगी० ॥ १२ ॥ कुशल कमाई करणकुंजी, फिर काशी सुधारया काज, ॥ काशी० चंद्रपुरी ओर संखपुरीजी, वृजेरतनपुरी जिनराज रतन० ॥ १३ ॥ दर्शन कीना भावसुंजी, सारया मनरा मनोरथ सोय ॥ मन० ॥ फिर श देवजुहा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रियाजी, जवरी वाग सागरगंजहोय॥वाग० ॥ १४ ॥
लखनउ जाय अयोध्यामेंजी, चाल्योमेरु अमरकर
नाम ॥ मेरु० ॥ फिर नोपाल उज्जेनसुंजी, आया
अपणपुर रतलाम ॥ अपण० ॥ १५ ॥ वाग सोहाणे
वीचमेंजी, वाजे मंदिर श्री जिन देव ॥ मंदिर० ॥
अमियऊराचंदप्रनुराजकीजी, थावे नित २
अधिकेसेव ॥ नित० ॥ १६ ॥ मंदिरश्री दत्तसू-
रिकोजी, नीतरज्ञानजंमारसोहाय ॥ ज्ञान० ॥
नावेनवि जननावनाजी, मिलनरनारी मंगलगाय
॥ नर० ॥ १७ ॥ पाठशालादत्तसूरिकीजी,
साथेलायब्रेरीकुशलसूरिंद ॥ लाय० ॥ रूपकुंवर
एकराविंयाजी, मिलफूलकुंवरआणंद ॥ फूल० ॥
१० ॥ रायसाहबकेशरिसिंहजी, मानेआज्ञाहुक्मअ-
नेक ॥ आज्ञा० ॥ विनयजोपालत बिंदणोजी,
फूलकुंवरवृद्धिविधलेख ॥ कुंवर० ॥ १९ ॥ जग-
णीसे सित्तरे जेठमेजी, वदबारसदिनगुरुवार ॥ वा-
र० ॥ जेशाणे वमेरेउपासेरजीशुनस्तवनकरयोते-
य्यार ॥ स्तवन० ॥ वृद्धिचंदगुरुजैनकाजी, देवे-
धर्म तणाउपदेश ॥ धर्म० ॥ तेजकविकथविनवे-
जी, गुणगावे हृदयहमेश ॥ गावे० ॥ २१ ॥ इति
पदं सम्पूर्णम् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ देशी पनजीकी ॥

कामण गारोजी पारस प्रभु मन हर लीयो हमारोजी ॥ कामण० ॥ मनको वशकर लियो प्रभुते एसोजादुकारोजी ॥ तुझ सिवाय नहीं देव दूसरा लागत प्यारोजी ॥ कामण० ॥ १ ॥ लूद्रव पुरके मांय प्रभुजी देख्यो तोय छंदगारोजी ॥ दिनमें रुप के ही प्रगटे तुं मुलकसे न्यारोजी ॥ कामण० ॥ २ ॥ केशर चंदन मृगमद घसकर पुजुं अंग तुमारोजी ॥ शिवचंद कहे इस भवसागर से पार उतारोजी ॥ कामण० ॥ ३ ॥ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ देशी नारनोलके ख्यालकी ॥

जेशाणे मांहि किलापर सांचो पारस नाथजी ॥ जेशाणे० ॥ किलाउपर भला विराज्या वामासुतजिनराय ॥ हीरावरण अंग प्रभुजीको, रविसेंतेज सिवाय ॥ देख झिलक प्रभुके लिलाटको शशी गयो सरमायजी ॥ जेशाणे० ॥ १ ॥ सित्तर सहस्त्र रुपैयों की अंगी सोहत हे नगकारी ॥ शिरपर सहस्त्र फणामनमोहे, सुरत लागे प्यारी ॥ जिन २ को प्रभु परचा देवे पुजे दुनियां सारीजी ॥ जेशाणे० ॥ २ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूर देश सुं नरनारी नृप, दर्शन करणे आवे केशर चंदन अतर लगावे मृगमद धूप खेवावे ॥ माणक मोती कनकरजतका जर २ थाल चटावेजी ॥ जेशाणे० ॥ ३ ॥ निर्धनकुं अतीदेत लक्ष्मी पलमें करे निहार, वांझ नारकुं दे सुत चंचल रोगी कियो विचार, शिवचंद कहे कुमति ओर विपदा देवामा सुत टारजी ॥ जेशाणे० ॥ ४ इति पदं संपूर्णम् ॥

॥ शुभं भूयात् ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only